# पाठ्यक्रम में नवाचार
## (INNOVATIONS IN CURRICULUM)

1960 ई. के बाद पाठ्यचर्या-विकास पर पुनर्विचार किया गया। इस क्षेत्र में ब्रूनर, हर्ड आदि विचारकों ने उल्लेखनीय कार्य किया। **हर्ड** (1969) ने पाठ्यचर्या में नवाचारों (Innovations) को इन शब्दों में अभिव्यक्त किया है–

Scanned with CamScanner

1. पाठ्यचर्या का निर्माण-कार्य स्थानीय स्तर पर न किया जाये वरन् यह कार्य राष्ट्रीय स्तर पर हो।

2. विषय-वस्तु के चयन के लिए अवधारणा योजना को आधार बनाया जाये।

3. विषय-वस्तु का चयन विशेषज्ञों अथवा अन्वेषकों द्वारा किया जाये।

4. शिक्षण छात्र-केन्द्रित हो तथा सीखने के लिए प्रयोगशाला का प्रयोग किया जाये।

**'लर्निंग टू बी'** (Learning to be) नामक प्रकाशन द्वारा पाठ्यचर्या में निम्नलिखित तत्त्वों पर बल दिया गया—

1. विषय-वस्तु का चयन सामाजिक परिप्रेक्ष्य में होना चाहिए।

2. भिन्न-भिन्न विषयों का एकीकरण होना चाहिए।

3. पाठ्यचर्या द्वारा छात्रों के सामाजिक, भावात्मक तथा आध्यात्मिक पक्षों के विकास पर बल दिया जाना चाहिए।

4. विद्यालय की पाठ्यचर्या वास्तविकता लिए हो।

उपर्युक्त नवाचारों द्वारा पाठ्यचर्या में अनेक परिवर्तन सम्भव बन पड़े हैं तथा सीखने और शिक्षण की विधियों में नवीन परिवर्तनों को स्थान मिल रहा है। साथ ही पाठ्यचर्या मॉडल बनाने का प्रयास किया जा रहा है जिससे शिक्षा प्रभावी बन सके।

Scanned with CamScanner